TECHE
UDINE

MANOSCRITTI

FONDO PRINCIPALE

Manoscritto n. **P_MSS_4396**

Nel Fondo Principale sono confluiti la maggior parte dei lasciti manoscritti pervenuti alla Biblioteca Civica «Vincenzo Joppi» nel corso del tempo: si tratta perciò di un fondo composito nel quale è possibile trovare manoscritti di argomento liturgico, scientifico, giuridico, botanico e altro.

Collocazione:

Biblioteca Civica "Vincenzo Joppi", Udine
https://www.techeudine.it/fondo-principale
https://www.sbhu.it/

लोलियामन्नुष्पइव्यनश्चिषइतत्पासावधानजइ२॥ मूर्खमनुष्पकामविषयंमत्परा मोहीमारमबकरूमाबंतजव॥ मिथ्यमनुष्यपत्निहिश्रईबोल
।ज२॥ ।३॥। ।आचरइ॥।
॥६०॥लुद्धानरा अत्थपराहवंति।मूढानराकामपराहवंति।बुद्धानराखंतिपराहवंति।मिस्सानरातिन्निविअ ५
।लपंडित॥४॥ जिकेविरोधरूंनीविरक्तप्रया।तिकेमाक्षजेसिद्धंभनीरीतिचालइ॥ तेमअवंतजिके धर्मअंनीचालइउक्तकइनइ
यरंति॥६१॥तयंमिस्सा उविरचा विरुद्धा।तसाक्कुणाजसमयंचरंति।तसत्तिणा हानवलंतिधम्मा।तव
तेनाइजिकेआपदाइअपगारक्कइ२॥ क्रोधइकरीअनिवृत्तसहितलेसुरुकतलइ२॥ अहंकारखंतेशोकपरछवइ॥ मायावीमनुष्यनि
प्रताजवसणाहवंति॥६२॥कोहातित्तूयानमुहंलहंति।माणंसिणासोयपराहवंति।मायाविणाहो
रथकअनेरानतदासजूव३॥ नोनीमनुष्यस्याणीकरता॥कोपेजिवसमरीषत्रसमतकिसंजजीरदुयामेषु॥ मानजिव३॥मित्रकिसं
नरकिजा ३॥
तिपरस्सापसालुद्धामहिस्सानरसयं३विंति॥६३॥कोहाविसंकिंअमयंअहिंसा।माणाअरीकिंहिअमप्पम ५
नअप्रमादपलउ॥ मायाहितनमायारणुकि॥ लोभेइज्जइरकामुरकिंकिमरुकहाडजमैलोभ॥ आजेसीप्पपरिणमनइविनीतलेदवरखुजिनज ५॥=
।रुजेम.तमायु॥
उमायायाभइकिंसरणंचुसद्वं॥लोहाउहक्किंसुहमाहतुठ्ठा॥६४॥बुद्धीअचंडंभजएविणीयं।कुद्धंकुसीअ
कोशीक्रूमीलउंसकीविनिनर॥ देएउनशवितइअलझीदरिद्रपणउतजइ॥ सावशमाशिरितोलझीमेवइ॥ बांभइमित्रहृतभमनुष्यनर
लेत्तदाप अकित्तीसंतिन्न विसंतयाएअलच्छी।सा जविअसंसयपसिरीय॥६५॥वयंतिमित्ताणिनरंकया 1
।नजरकरुताजा भयरु॥

ग्रनेरी३ विकथानइ धर्मनी कथा जीपइ॥ सगला ग्रनबलनइ धर्मनउ बल जीपइ॥ सगला ईं सैसारीक सुखनइ धर्मनउं सुख जीपइ॥

सव्वा कहा धम्मकहा जिणाइ। सव्वं बलं धम्मबलं जिणाइ। सव्वं सुहं धम्मसुहं जिणाइ॥ २॥ जूयप्पसत्तस्स

जे मनुष्य जूनइ विषइ प्रसक्त छइ तेहनउ धन नाश थाइ॥ मांसाहारी नी दया जाइ॥ मद्य पानासक्त मनुष्यनउ यश जाइ॥ वेश्यासक्तनइ कुल जाइ॥

धणस्स नासो। मंसप्पसत्तस्स दयाइ नासो। मज्जप्पसत्तस्स जसस्स नासो। वेसापसत्तस्स कुलस्स नासो।

नउ कुलनउ नाश हुइ॥ जीवहिंसानउ प्रसक्त तेहनउ धर्म छि। चोरीनइ विषइ प्रसक्तनउ शरीर नाश थाइ॥ तिम जे परस्त्रीनइ विषइ प्रसक्त ते सर्वनउ नाश हुइ॥ ते नरकगति पामइ॥

सो। हिंसापसत्तस्स सुधम्मनासो। चोरीपसत्तस्स सरीरनासो। तहा परत्थीसु पसत्तयस्स सव्वस्स नासो रं

दानं दरिद्रीनइ असमर्थनइ क्षमा॥ इच्छा निरोध सुखीयानइ॥ तारुण्य पणइ

अहमा गई य॥ ३॥ दाणं दरिद्दस्स पहुस्स खंती। इच्छानिरोहो य सुहोइयस्स। तारुण्णए इंदियनिग्गहो

यौवनइ इंद्रीनउ निग्रह करिवउ। एव्यारि बोल गाढा करता दोहिला जाणिवा॥ धर्म आचरीइ। सर्वज्ञ भगवंतइ उपदेश्यउ

आ चा न तउ जी वितव्य क हइलोक हइ लोक न विषइ॥ २ ॥ तेपउ

होइ॥ चत्तारि एयाणि सुदुक्कराणि॥ ४॥ असासए जीवियमाइलोए॥ धम्मं चरे साहु जिणोवइट्ठं।

जिणइ कारणइ धर्मइ ज शरीर ज्ञानी। त्राण शरण गति॥ एह वचन धर्म सेवीसु परलोकइ सुख लिइ॥ श्री ऋषि नाम कुलकावचूर्णि

धम्मो य ताणं सरणं गई य। धम्मं न सेवित्तु सुहं लहंति॥ ५॥ इति श्री सोमप्रभसूरि विरचितं कुलकं संपूर्णं॥

वचूर्णि॥

२